मंथन समूह सफलता की कहानी...

---प्रेरणादायक किसानों की सफल गाथाएं---

मछली पालन से बदली किसान रुगनाथ सिंह की किस्मत, हो रही बंपर कमाई, दूसरों के लिए बने प्रेरणा स्त्रोत

मध्य प्रदेश के जिला सीहोर के अन्तर्गत तहसील इछावर ग्राम सेवनिया खेरी के रहने वाले 56 वर्षीय किसान रुगनाथ सिंह के पूरे परिवार की जिम्मेदारी इन्हीं के ऊपर है। रुगनाथ सिंह खेती के साथ मछली पालन का भी शौक रखते हैं इन्होंने चार साल पूर्व मत्स्य पालन की शुरुआत की थी। सबसे पहले उन्होंने एक बीघा में तलाब खुदवाया और इसके बाद मत्स्य पालन शुरू किया। रुगनाथ सिंह के लिए यह पहली बार एक तरह से प्रयोग ही था। पहले ही प्रयास में उम्मीद से बेहतर मछलियां तैयार हुईं और इसे आमदनी भी बढ़ी। इसके बाद व्यवसाय को व्यापक रूप देते हुए 3 बीघे में तालाब खुदवाया और मछलियां पालने लगे। तीन बीघा के तालाब से दो बार में 300 से 400 क्विंटल मछलियों का उत्पादन हुआ। जिसे रुगनाथ सिंह ने बाजार में बेचकर लगभग 5 से 6 लाख रुपए की बचत की।

एक एकड़ में मछली पालन के माध्यम से 16 से 20 साल तक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इससे किसान हर साल 5 से 6 लाख रुपये की कमाई कर सकते हैं। मछली पालन की नई तकनीकों में मिश्रित मछली पालन बेहद लोकप्रिय हो रहा है। इस तकनीक को अपनाकर किसानों द्वारा 5 गुना ज्यादा मछलियों का उत्पादन कर सकता है। इसमें तालाब में अलग-अलग मछलियां पाली जाती हैं। मछली पालन के दौरान मछलियों की फीडिंग, तालाब की साफ-सफाई तथा तालाब में मछलियों के लिए ऑक्सीजन की पूर्ति में जो खर्च आता है, बत्तख पालन से ये सभी खर्चे लगभग खत्म हो जाते हैं। दरअसल, बत्तखों को मछली पालन के तालाब में रखने से तालाब की सफाई में मदद मिलती है, क्योंकि वे गंदगी को खाते हैं। इसके अलावा बत्तखों के तैरने से तालाब का ऑक्सीजन लेवल बना रहता है। इससे मछलियों को अच्छा वातावरण मिलता है और मछलियों का विकास बेहतर होता है। सबसे अच्छी बात तो यह है कि पानी में बत्तखों का वीड, मछलियों के लिए बेहतर आहार का काम करता है।

किसान रुगनाथ सिंह है जो मछली पालन कर सालाना 5 से 6 लाख की कमाई कर रहे हैं। इससे पहले रुगनाथ सिंह अपने गांव को छोड़ कर गुजरात के शहर सूरत में काम करने के लिए गए थे। जहां लंबे समय तक रहकर काम भी किया। हालांकि घर आने के बाद खुद का रोजगार शुरू करने का विचार कर मत्स्य पालन को चुना। रुगनाथ सिंह ने बताया कि मछलियां तैयार होने के बाद व्यापारी उनके तालाब पर आकर खरीद कर ले जाते हैं। उनके पास रोहू, कतला, प्यासी, कमलकट, ब्रिगेड सहित कई तरह की मछलियां मिलती है। यही नहीं ये लोग मछलियों के सीड्स (बच्चा) भी तैयार कर सप्लाई करते हैं। मछली पालन में साल में लगभग डेढ़ से दाई लाख खर्च आता है और आराम से 5 से 6 लाख की बचत हो जाती है।

इलाके के किसानों को भी मछली पालन से जोड़ने का कर रहे हैं काम: रुगनाथ सिंह बताते हैं कि खुद तो मत्स्य पालन कर ही रहे हैं। इसके साथ अन्य किसानों को मदद कर आत्मनिर्भर बनाने का भी काम कर रहे हैं। आस-पास के किसानों को बीज देकर उन्हें भी मत्स्य पालन के कारोबार में जोड़ा है। मत्स्य पालन से जुड़कर किसान अच्छी कमाई कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि बहुत ही जल्द व्यापक स्तर पर हैचरी भी खोला जाएगा, ताकि बड़े स्तर पर मछलियों के बीज का सेलिंग किया जा सके।

रोजगार
मंथन पॉलीटेक्निक कॉलेज
इंदौर-भोपाल हाईवे पुलिस चौकी के पास अमलाहा सीहोर, (म.प्र.)
(एआईसीटीई, भारत सरकार द्वारा अनुमोदित)

पॉलिटेक्निक (डिप्लोमा इंजीनियरिंग)
इलेक्ट्रिकल (इंजी.) (E.E.)
सिविल (इंजी.) (C.E.)
मैकेनिकल (इंजी.) (M.E.)
कंप्यूटर साइंस (इंजी.) (C.S.E.)
इलेक्ट्रॉनिक एवं टेली कम्यूनिकेशन (इंजी.) (E.C.E.)

- : विशेषताएं :-
- शत् प्रतिशत रोजगार के सुनहरे अवसर।
- सुव्यवस्थित वर्कशॉप तथा आधुनिक मशीनों पर कार्य करने का अवसर।
- उत्तम गुणवत्ता का प्रशिक्षण।
- छात्रों को भविष्य निर्धारित करने का मौका।
- न्यूनतम शुल्क पर छात्रावास की सुविधा।

न्यूनतम योग्यता: 10वीं/12वीं कक्षा उत्तीर्ण

छात्रवृत्ति
- अल्पसंख्यक/अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के छात्रों हेतु भारत सरकार एवं राज्य सरकार की छात्रवृत्ति योजनाओं की सुविधा।
- अल्पसंख्यक वर्ग की छात्रवृत्ति के लिए 10वीं/12वीं में 50 प्रतिशत अंक आवश्यक।

प्रदेश की एकमात्र संस्था जो प्रशिक्षण के उपरांत 100% रोजगार प्रदान करती है
अपना उज्जवल भविष्य निर्धारण करने के लिए सम्पर्क करें : मंथन पॉलिटेक्निक कॉलेज-मो.6232009300

उन्नत जानकारी प्राप्त कर किसान अमर सिंह रैकवार ने लागत से अधिक मुनाफा लिया

कपास विश्व और भारत की एक बहुत ही महत्वपूर्ण रेशे वाली और व्यापारिक फसल है। कपास की फसल को पानी की ज्यादा जरूरत नहीं होती कपास सब से ज्यादा उगाई जाने वाली खरीफ फसल है।

मध्य प्रदेश के सीहोर जिले के अन्तर्गत तहसील इछावर ग्राम निपनिया खेरी के रहने वाले 58 वर्षीय जागरूक किसान श्री अमर सिंह रैकवार जैविक पद्धति से कृषि कार्य करते हैं। अमर सिंह रैकवार मुख्य रूप से अन्य फसलों दलहन के साथ कपास की भी खेती करते हैं। किसान अमर सिंह रैकवार जी अपने पूर्वजों द्वारा विरासत में प्राप्त ज्ञान से पुरानी पद्धति से खेती करते आ रहे थे। उनकी दिक्कत यह थी उन्हें कीट तथा रोगों की जानकारी नहीं थी। पूर्ण रूप से समय, श्रम, पानी खाद का प्रयोग करने के बाद भी अच्छी फसल का उत्पादन नहीं ले पा रहे थे। तभी उनके किसान मित्र से ज्ञात हुआ कि मंथन समाज सेवा समिति से सम्पर्क करना चाहिए। सीहोर जिले में बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट सरकार के सहयोग से चलाया जा रहा है। जिसमें कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक सहयोग प्रदान करते हैं। प्राप्त जानकारी से प्रेरित होकर उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र के अधिकारी व मंथन समाज सेवा समिति के क्षेत्राधिकारी श्री राजेश वर्मा जी से मुलाकात कर सहायता की गुजारिश की। समिति द्वारा उन्हें कपास के उच्च गुणवत्ता वाले बीज, खेत तैयार करने, मशीनीकृत बुवाई करने व सही मात्रा में खाद, दवाईयां तथा बीजोपचार कर बुवाई करने और खरपतवार नाशक दवाईयों का उपयोग करवाया गया। बायोटेक हब प्रोजेक्ट के तहत समय-समय पर वैज्ञानिक सलाह दी गई। जिसका सही विधि द्वारा उपयोग करवाया गया।

अमर सिंह रैकवार जी ने फसल का प्रबंधन बहुत अच्छा किया। इस बार तकनीकी रूप से कपास की खेती की। अमर सिंह रैकवार जी की मेहनत सफल हुई। नई तकनीक का उपयोग करके किसान ने लागत से अधिक कपास का भरपूर उत्पादन लिया। संस्था द्वारा सीहोर जिले के अन्य किसानों को भी खेत में लगातार सुधार व कम लागत में अधिक मुनाफा की खेती करवाई गई। किसान द्वारा भी ग्राम के अन्य किसानों को भी तकनीकी रूप से कपास तथा अन्य फसलों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित करवाया। किसान रैकवार जी के कार्य की सराहना हुई।

कृषक अमर सिंह रैकवार जी ने मंथन ग्रामीण एवं समाज सेवा समिति का आभार व्यक्त किया। कृषक अमर सिंह रैकवार जी ने बताया कि इस सफलता का मुख्य कारण मंथन के अधिकारियों द्वारा समय-समय पर खेत में आकर फसल के संबंध में पूर्ण जानकारी देना एवं वैज्ञानिकों द्वारा समय-समय पर फसल से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराना है। मुझे अपनी इस सफलता पर खुशी है तथा इसका श्रेय मैं मंथन ग्रामीण समाज सेवा समिति तथा डी.बी.टी. द्वारा कृषकों के हित में लिए गए निर्णयों को बहुत धन्यवाद देना चाहता हूँ। अमर सिंह रैकवार जी ने बायोटेक किसान हब प्रोजेक्ट के अधिकारी तथा अन्य सभी का धन्यवाद किया। किसान ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि यदि इसी प्रकार से बायोटेक हब के माध्यम से कृषकों के साथ मिलकर ऐसे प्रोग्राम साझा किए जाते रहे तो सभी किसान भाई नई ऊंचाईयों को निश्चित रूप से छूने में सफल होंगे।